Madhya Bharti
Humanities and Social Sciences

मध्य भारती
मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

ISSN: 0974-0066

मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में रामचरित मानस का समीक्षात्मक अध्ययन

प्रवेश शर्मा

शोधार्थी

मोहित मिश्रा

शोध निर्देशक, सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय

शायद ही कोई व्यक्ति हो जिसने रामचरित मानस का नाम न सुना हो। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित श्री रामचरित मानस में निहित आध्यात्मिक, समाजिक तथा नैतिक मूल्यों के विषय में किसी प्रकार का कोई विवाद नहीं है। रामचरितमानस का स्थान हिन्दी साहित्य में ही नहीं जगत के साहित्य में निराला है, इसके जोड़ का सर्वांगसुन्दर उत्तम काव्य के लक्षणों से युक्त साहित्य के सभी रसों का आस्वादन कराने वाला काव्य कला की दृष्टि से भी सर्वोच्य कोटि का तथा आदर्श गृहस्थ्य/गृहस्थ-जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, आदर्श पतिव्रत धर्म, आदर्श भ्रातृधर्म के साथ-साथ सर्वोच्च भक्ति, ज्ञान, त्याग, वैराग्य व सदाचार की शिक्षा देने वाला, स्त्री-पुरूष, बालक वृद्ध और युवा सबके लिये समान उपयोगी एवं सर्वोपरि सगुन साकार भगवान की आदर्श लीला/मानवलीला तथा उनके मन, प्रभाव रहस्य तथा प्रेम के गहन तत्व को अत्यन्त सरल रोचक एवं ओजस्वी शब्दों में व्यक्त करने वाला कोई दूसरा ग्रन्थ हिन्दी भाषा में ही नहीं कदाचित संसार की किसी भाषा में आज तक नहीं लिखा गया। यही कारण है कि अमीर-गरीब, शिक्षित-अशिक्षित, गृहस्थ सन्यासी, स्त्री-पुरूष, बालक-वृद्ध सभी श्रेणी के लोग इस ग्रन्थ को यत्न से पढ़ते हैं तथा भक्ति, ज्ञान नीति सदाचार का जितना प्रचार इस ग्रन्थ से हुआ है उतना कदाचित किसी और ग्रन्थ से नहीं हुआ।

रामचरित मानस भारतवर्ष की सांस्कृतिक एकता का प्रबल सूत्र रही है जहाँ भारत की प्राचीन भाषाओं (पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि में विस्तृत राम साहित्य अनेक विधाओं में लिखा गया वहीं यह दक्षिण ऐशिया और दक्षिण पूर्व एशिया के लगभग सभी देशों जैसे- जावा, बाली, मलय, हिन्द, चीन, स्याम आदि में भी उपलब्ध होता है चीन का "दशरथ कथानम्" इंडोनेशिया का "रामायण काकावीन" जावा का "सेरतराम" और स्याम का "रामकियेन" आदि इसके कतिपय उदाहरण हैं। सम्भवतः विश्ववाङ्गमय में वाल्मीकि रामायण वह प्रथम ग्रन्थ है जिसमें नैतिक मूल्यों का काव्यात्मक, व्यावहारिक और मूर्तिमान रूप दिखाई देता है मनुष्य के अभ्युदय और निःश्रेयस के लिये ये मूल्य इतने उपयोगी और महत्वपूर्ण है कि वाल्मीकीय रामायण के बाद रामचरित मानस में तो इसको दैवी गरिमा दी गई है।

ISSN: 0974-0066

मानस में अहंकार करने का परिणाम बड़ी सहजता से बताया गया है निष्कर्ष के अन्तर्गत हम एक प्रसंग की चर्चा करेगें जहाँ बालि के पुत्र अंगद ने सही राह दिखाने का प्रयास किया था और बताया था कि कौन सा मनुष्य जीते जी मरे हुये के समान हो जाता है। रावण यह बात नहीं समझ पाया इसलिए ही उसने अपने ही सामने अपने वैभव को नष्ट होते हुये देखा। रावण कामी होने के साथ-साथ शिवभक्त भी था किन्तु अंहकारी प्रवृत्ति थी, उसका वेदवती तथा रंभा के साथ व्यवहार अनुचित था और फिर सीता का भी हरण कर लिया इसीलिये अंगद ने रावण से कहा कि कामी जीते जी मरे के समान होता है ऐसा व्यक्ति अपनी मर्यादा भूल जाता है इस कारण विनाश की ओर जाता है।

रावण अहंकार से नकारात्मक विचारों वाला हो गया था। उसे सत्यता दिखाई ही नहीं दे रही थी। इसी कारण वह राम की शक्ति को समझ ही न सका और वह अपनी उल्टी सोच के कारण अपने विनाश की ओर बढ़ता गया।

मर्यादा कहने को तो एक छोटा सा शब्द है किन्तु मानव जीवन का सम्पूर्ण आदर्श इससे जुड़ा हुआ है समाज में सन्तुलन बनाये रखने के लिये हर रिश्ते की एक मर्यादा निर्धारित की गई है आज चिन्ता का विषय यही है कि ध्वस्त होती मर्यादाओं के कारण समाज दयनीय स्थिति से गुजर रहा हैं अहंकार से तथा दुष्टता से भरा हुआ आज का मानव मर्यादा की हर सीमा लांध जाता है। बड़ों का सम्मान तथा शिष्टाचार की सीमा को तोड़ने में तल्लीन हैं। राम का जीवन चरित्र बहुत कुछ सिखाता है यह कहना या इस प्रकार के प्रवचन देना हमें बहुत आसान लगता है और आसान होता भी है किन्तु इन सभी बातों को जीवन में व्यवहत करना बड़ा मुश्किल कार्य है। यदि इन बातों को हम जीवन में अपनाकर ही दूसरों को अनुसरण करने का उपदेश करें तो सौ फीसदी दूसरा बालक/व्यक्ति अपनायेगा और वह दिन दूर नहीं होगा जो रामराज्य जैसा हो। भारत में आज पाश्चात्य स्वरूप प्रभावी हो चुका है अंग्रजों ने भारतीय शिक्षा नीति में परिवर्तन के पूर्व तत्कालीन स्वदेशी शिक्षा पद्धति के बारे में व्यापक सर्वेक्षण किया था यह सर्वविदित है शिक्षा में पाश्चात्य के प्रभाव के कारण हमारी संस्कृति पर भी प्रभाव झलक रहा है।

आधुनिक समाज में रामचरित मानस की प्रासांगिता का आलोचनात्मक अध्ययन

तुलसीदास विरचित रामचरित मानस सार्वकालिक रचना है। मानस में मंगलकामना की गई है तथा पग पग पर कर्तव्य पालन को महत्व दिया गया है। रामचरित मानस की प्रासंगिता को स्पष्ट करने के लिये हम मानस के पात्रों के विषय में प्रकाश डालेंगें-

रामः- रामचरिम मानस के नायक राम हैं दशरथ पुत्र श्री राम पुरूषोत्तम के रूप में दर्शाये गये हैं। रामायण में वाल्मीकि ने राम को सांसारिक व्यक्ति के रूप में दर्शाया गया है वहीं गोस्वामी जी ने विष्णु भगवान का अवतार

ISSN: 0974-0066

माना है। कवि मैथिलीशरण गुप्त ने भी यशोधरा में राम के आदर्शमय महान जीवन के विषय में कितना गहन व सहज लिखा है-

"राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है।
कोई कवि बन जाये स्वयं सम्भाव्य है।"

राम मर्यादा के परमादर्श के रूप में प्रतिष्ठित है वे पिता के वचनों/आज्ञा पालन हेतु बन जाने के लिए सहर्ष तैयार हो जाते हैं पत्नी की रक्षा के किये उद्धार करते हैं। राम कर्त्तव्य परायण हैं अपनी माता से इस प्रकार कहते हैं-

"आयसु देहि मुदित मन माता। जेहिं मुद मंगल कानन जाता।।
जनि सनेह बस डरपति भोरें। आनँदु अंब अनुग्रह तोरें।।"

(अर्थात् हे माता तू प्रसन्न मन से मुझे आज्ञा दे, जिससे मेरी वनयात्रा में आनन्द-मंगल हो। मेरे स्नेह वश भूलकर भी डरना नहीं। हे माता। तेरी कृपा से आनन्द ही होगा।)

अयोध्या काण्ड ५२(४)

"बरस चारिदस बिपिन बसि करि पितु वचन प्रमान।
आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान।।

अयोध्या काण्ड ५३(दोहा)

अर्थात् चौदह वर्ष वन में रहकर पिताजी के वचन को प्रमाणित (सत्य) कर, फिर लौटकर तेरे चरणों का दर्शन करूँगा तू मन को म्लान(दुःखी) न कर।

इस प्रकार के वचन सुनकर माताएँ अत्यन्त विकल हो गईं उस शीतल वाणी को सुनकर कौशल्या वैसे ही सहमकर सूख गईं जैसे बरसात का पानी पड़ने से जवासा सूख जाता है। किन्तु रामचन्द्रजी को मानो वही असली सुख प्राप्त हुआ ऐसा जान पड़ता है।

वे भरत से कहते हैं-

"मुखिया मुख सो चाहिए खान पान कहूँ एक।
पालइ पोषइ सकल अंग तुलसी सहित विवेक।।

अयोध्या काण्ड ३१५

ISSN: 0974-0066

अहिल्या का उद्धार करते हैं। सीता परित्याग के बाद दूसरा विवाह नहीं करते बल्कि यज्ञ में सीताजी की ही प्रतिमा रखवाते हैं इस प्रकार श्रीराम सदैव कर्त्तव्य निष्ठा के प्रति आस्थावान रहे हैं। उन्होनें कभी भी लोक मर्यादा के प्रति दौर्बल्य प्रकट नहीं होने दिया।

सीताः- सीता जी रामचरित मानस की मुख्य नायिका है वे मिथिला में जन्मी थी वे जनक की पुत्री थी राजा जनक की प्रतिज्ञानुसार ही उन्होनें विवाह किया इन्होनें स्त्री व पतिव्रता धर्म का पूर्णरूपेण पालन किया। पंचवटी में लक्ष्मण से अपमानित शूपर्णखा ने अपने भाई को भड़काया जिससे रावण न सीता का हरण कर लिया आकाशमार्ग से जाते समय पक्षीराज जटायु के रोकने पर रावण ने उसके पंख काट दिये जब कोई सहायता नहीं मिली तो सीता जी ने अपने पल्लू से एक भाग निकालकर उसमें आभूषणों को बांधकर नीचे डाल दिया। जिससे जाने वाले मार्ग को पहचाना जा सके। जब हनुमान जी लंका पहुँचे। तो अपने प्रभु श्री रामजी को स्मरण कर व नमन कर अशोकवाटिका में प्रविष्ट हुये वहाँ सीता जी को देख बहुत हर्षित हुये। रावण ने सीता जी से विवाह का प्रस्ताव रखा तब सीता जी ने एक घास के टुकडे को अपने और रावण के बीच रखा और कहा हे रावण! सूरज और किरण की तरह राम और सीता अभिन्न है। राम व लक्ष्मण की अनुपस्थिति में मेरा अपहरण कर तुमने अपनी कायरता का परिचय दिया है और राक्षस जाति के विनाश को आमन्त्रण दिया है। अब तुम्हे अपने विनाश का समय शीध्र समझना चाहिए। अब तुम किसी भी प्रकार नहीं बच सकते अगर बच सकत हो तो केवल राम की शरण मे जाने पर ही बच सकते हो अन्यथा तुम्हारी नगरी लंका का अवश्य ही विनाश होगा। इस प्रकार सीता जी ने वाकपटुता से बहुत से वचन कहे। रावण के जाने के बाद हनुमान जी ने सीता को लंका आने का कारण बताया। वहीं सीता जी को राम की मुद्रिका देते हैं और सीता जी से वापस लौटते समय साथ चलने को कहते हैं इस पर सीताजी उन्हे समझाने लगती हैं कि यह अनुचित है रावण ने उनका हरण कर रघुकुल का अपमान किया है। अतः लंका से श्रीराम मुक्त करायेगें और रावण को परिणाम भी भुगतना होगा यह श्री राम का कर्त्तव्य है। वे हनुमान जी से दो माह का स्मरण कराने की विनती भी करती हैं हनुमान जी ने सीता जी से अनुमति मांगी सीताजी ने चूडामणि देकर उन्हें जाने की अनुमति दी।

लक्ष्मण - लक्ष्मण सुमित्रा के पुत्र थे। इनको शेषनाग का अवतार माना जाता है। रामचरित मानस के वे आदर्श पात्र हैं। वे राजा दशरथ के तीसरे पुत्र व राम के छोटे भाई हैं। दोनों भाइयों का प्रेम प्रेरणा योग्य है। लक्ष्मण वाकपटु हैं जब परशुराम धनुष टूटने पर क्रोधित हो रहे हैं तब व चतुरता पूर्वक कहते हैं-

"बहु धनुहीं तोरी लरिकाईं।
कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं।।
एंहि धनु पर ममता केहि हेतु।
सुनि रिसाइ कह भृगुकुल केतू।।

ISSN: 0974-0066

अर्थात् हे गोसाईं! लड़कपन में हमने बहुत सी धनुडियाँ तोड़ डाली। किन्तु आपने ऐसा क्रोध कभी नहीं किया। इसी धनुष पर इतनी ममता किस कारण से है? यह सुनकर भृगवंश की ध्वजास्वरूप परशुराम जी कुपित हो उठे। राम को १४ वर्ष का वनवास मिला किन्तु राम-सीता के साथ लक्ष्मण ने भी वनवास भोगा। अरण्य काण्ड में जब शूर्पणखा रूप धर कर आयी और राम द्वारा लक्ष्मण के पास ज बवह पहुँची ता बड़ी ही चतुरता से लक्ष्मण बोले-

"सुन्दरि सुन मैं उन्ह कर दासा।
पराधीन नहिं तोर सुपासी।।
प्रभु समर्थ कोसल्पुर राजा।
जो कछु करहिं उनहि सब छाजा।।"

अरण्य काण्ड १६(७) पृष्ठ संख्या ५८८

सदाचार की भावना लक्ष्मण के अन्दर पूर्णतः विद्यमान है। सीता के आभूषण मिलते हैं तो राम लक्ष्मण से पूछते हैं कि हे लक्ष्मण! क्या तुम इन आभूषणों को पहचानते हो।" लक्ष्मण ने उत्तर में कहा "मैं न तो बाहों में बंधने वाले केयूर को पहचानता हूँ और न ही कानों के कुण्डल को मैं तो प्रतिदिन माता सीता के चरण स्पर्श करता था। अतः उनके पैरों के नूपुर को अवश्य ही पहचानता हूँ।" सीता के पैरों के सिवा किसी अन्य अंग पर दृष्टि न डालने का सदाचार का आदर्श है। लक्ष्मण की पत्नी का नाम उर्मिला है। उर्मिला सास की सेवा में तत्पर आदर्श चरित्र के रूप में चित्रित हैं। वे लक्ष्मण के मार्ग मे बाधक नहीं बनती बल्कि उन्हें भाई के साथ जाने देती हैं।

शत्रुध्न- रामचरित मानस के अनुसार राजा दशरथ के चौथे पुत्र थे। इनका चरित्र अत्यन्त विलक्षण था ये मौन सेवाव्रती थे। बचपन से ही भरत का अनुगमन तथा सेवा ही इनका मुख्य व्रत था ये मितभाषी, सदाचारी सत्यवादी विषय-विरागी तथा भगवान श्रीराम के दासानुदास थे जिस प्रकार लक्ष्मण हाथ मे धनुष लेकर राम की रक्षा करते हुये उनके पीछे चलते थे उसी प्रकार शत्रुध्न भी साथ रहते थे। जब भरत के मामा युधाजित भरत को अपने साथ ले जा रहे थे तब शत्रुध्न भी उनके साथ ननिहाल चले गये। यह मोह में नहीं फॅसे अतः विवाहिता पत्नी माता-पिता आदि को छोड़कर भरत के साथ रह कर उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य माना। भाईयों में अपार स्नेह था ननिहाल से लौटने पर श्रीराम के वनवास और पिता के मरण के समाचार से इनका हृदय दुख और शोक से व्याकुल हो गया वे कैकेयी पर क्रोधित हुये किन्तु राम ने शत्रुध्न से कहा-

शत्रुध्न! तुम्हें मेरी और सीता की शपथ है तुम माता कैकेयी की सेवा करना उन पर कभी भी क्रोध मत करना।

शत्रुध्न की पत्नी का नाम श्रुतकीर्ति है जो पतिव्रता व आदर्श रूप में चित्तित है।

ISSN: 0974-0066

भरतः- भातृभक्त भरत के विषय में जितना लिखा जाये कम ही होगा। राम के वनवास के विषय में ज्ञात होने पर वे बेचैन हो उठे। यह जानकर की यह सब कैकेयी ने कराया है तो माता कैकेयी पर भी क्राधित हुये। सब सुध बुध खो बैठे भरत राम को लौटाने के लिये चल पड़े उनके पीछे माताएं गुरू सम्बन्धीगण व समस्त अयोध्यावासी चल पड़े, हाथी, घोड़े, रथ आदि होते हुये भी वे पैदल चलने लगे सबके कहने पर वे कहने लगे क्या मेरे भाई राम रथ में बैठ कर ही वन को गये होंगें। माता कौशल्या के द्वारा बहुत आग्रह किये जाने पर बड़ी मुश्किल से वे रथ में बैठे।

इन तथ्यों से ज्ञात होता है कि वह भातृ प्रेम आज लुप्तप्रायः होता जा रहा है। फिर से आज की पीढ़ी को भरत जैसे प्रसंगों की आवश्यकता है।

भरत जी का चरित्र समुद्र की भाँति अगाध है, बुद्धि सीमा से परे है, लोक आदर्श का ऐसा अद्भुत सम्मिश्रण अन्यत्र अत्यन्त दुर्लभ है। पिता के स्वर्ग सिधारने पर वे कहते हैं कि राम ही मेरे बड़े भाई और पिता हैं। वे कैकयी से कहते हैं कि तुमने राज्य के लिये इतना बड़ा अनर्थ कर डाला मुझे जन्म देने से तो अच्छा था कि तुम बाँझ ही रहती मुझ जैसे कुलकलंक का जन्म तो न होता। चित्रकूट में पहुँच कर श्रीराम से अयोध्या लौटने का आग्रह करते हैं। किन्तु राम पिता की आज्ञा पालन से मुख नहीं मोड़ते, तब विवश होकर वे उनकी चरण पादुकायें लेकर अयोध्या लौट आते हैं। नन्दिग्राम में तपस्वी जीवन बिताते हुये ये श्रीरामके आगमन की चौदह वर्ष तक प्रतिक्षा करते हैं। चौदह वर्ष उपरान्त श्री राम अयोध्या पहुँच कर इनके विरह को शान्त करते हैं। श्रीराम भक्ति और आदर्श भातृप्रेम के उत्तम उदाहरण श्री भरत धन्य हैं वे कहते हैं-

"पुरजन परिजन प्रजा गोसाईं। सब सुचि सरस सनेहँ लगाईं।।
सउर बदिभल भव दुख दाहू। प्रभु बिनु बादि परम पद लाहू।।"

अयोध्या काण्ड ३१३(१)

अर्थात हे गोसाईं आपके प्रेम और सम्बन्ध से अवधपुरवासी, कुटुम्बी और प्रजा सभी पवित्र और रस (आनन्द) से युक्त हैं आपके लिये भव दुख (जन्म मरण के दुख) की ज्वाला में जलना भी अच्छा है और प्रभु आपके बिना परमपद मोक्ष का लाभ भी व्यर्थ है।

एक व्यावहारिक जीवन का मार्गदर्शन करता हुआ मानस सम्पूर्ण व्यावहारिक जीवन दर्शन को समेटे हुये है जिसमें हम संसारी जीवों के व्यक्तिगत पारिवारिक सामाजिक और राजनैतिक जीवन की झलक पाते हैं आज के सन्दर्भ में मानव मन के समक्ष अनेक चुनौतियाँ हैं।

रामचरितमानस आदर्श जीवन की आधारशिला है। मानस में निरूपित जीवन व्यवस्था आदर्श समाज की कोरी कल्पना न होकर पूर्णतः अनुभवगम्य और व्यावहारिक है इस ग्रन्थ के माध्यम से गोस्वामी जी ने परस्पर स्नेह सम्मान के साथ कर्त्तव्यपरायणता के माध्यम से न केवल जीवन को समृद्ध सुखी बनाने में अग्रण्य योगदान

ISSN: 0974-0066

दिया है वरन् मानस के पात्रों के माध्यम से ढ़ेरों सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन का कार्य किया है। मानस ने जो कार्य सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय एकता के लिये कई वर्षों पूर्व किया वह आज भी प्रासंगिक और अनिवार्य है। साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार समाज का पारखी होता है। वही प्रत्येक दिशा, दशा पर दृष्टि रखता है अपनी अडिग लेखनी के माध्यम से कुरीतियों को दूर करने और समाज के उत्थान के लिये भूमिका निभाता है। मानस के माध्यम से गोस्वामी ने साम्प्रदायिकता से होने वाली उलझनों से उबारने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

बालकाण्ड में वर्णित प्रयागराज के मुनि समागम में ऋषि भारद्वाज अपनी जिज्ञासा को शान्ति हेतु ऋषि याज्ञवल्क्य के साथ अपने संवाद में भगवान श्रीराम का उपासक बताते हुये कहते हैं कि हर कोई अविनाशी भोलेनाथ की उपासना करता है वहीं स्वयं भगवान शंकर श्रीराम की महिमा का बखान करते हैं–

"संतत जपत संभु अविनासी,
सिव भगवान ज्ञान गुन रासी।
आकर चारि जीव जग अहहीं,
कासी भरत परम परम पद लहहीं।।"

बालकाण्ड ४५(२) पृष्ठ संः ४८

अर्थात् कल्याण स्वरूप, ज्ञान और गुणों की राशि, अविनाशी भगवान शम्भु निरन्तर रामनाम का जप करते रहते हैं। संसार में चार जाति के जीव हैं काशी में मरने से सभी परमपद को प्राप्त करते हैं।

अपिच –

"संभु समय तेहि रामहि देखा।
उपजा हियँ अति हरषु विशेषा।।
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी।
कुसमय जानि न कीन्हि चिन्हारी।।"

बालकाण्ड ४९(१) पृष्ठ संः ५१

अर्थात् श्री शिवजी ने उसी अवसर पर श्रीरामजी को देखा और उनके हृदय में बहुत भारी आनन्द उत्पन्न हुआ। उन शोभा के समुद्र (श्री रामचन्द्रजी) को शिवजी ने नेत्र भरकर देखा परन्तु अवसर ठीक न जानकर परिचय नहीं दिया।

सुझाव–

ISSN: 0974-0066

जीवन में मूल्यपरक शिक्षा की प्रासांगिकता पर विचार करते हुये शर्मा (२००३) कहते हैं- "आदर्श रूप में संविधान में निर्देशित मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को मूल्यपरक शिक्षा का केन्द्र होना चाहिए साथ ही मूल्यपरक शिक्षा के कार्यक्रम की सफलता घर विद्यालय के आदर्श वातावरण तथा शिक्षक के आधार पर होनी चाहिए।"

भारत में मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में शास्त्री पालकी वाला का कथन है- "चार दशकों की स्वतन्त्रता के बाद जो तस्वीर आज भारत में उभर कर सामने आती है वह एक ऐसे शक्तिशाली राष्ट्र की तस्वीर है जो नैतिक पतन की अवस्था में है। हम आत्मा के घोर विघटन और मूल्यों के अनियन्त्रित पतन से त्रस्त हैं यह कई प्रकार से प्रकट है। भ्रष्टाचार, हिंसा, अनुशासनहीनता, लोकतन्त्र के नाम पर भीड़तन्त्र सम्मान की भावना तथा औचित्य का सर्वथा अभाव है। आज हमारा सामाजिक जीवन अनसुलझे तनावों, संघर्षों एवं हिंसा से खोखला हो गया है। झूठे मूल्यों एवं झूठे नायकों की पूजा ने आज इतना अधिक महत्व प्राप्त कर लिया है कि नई पीढ़ी के विद्यार्थी विरोधाभासों और मतिभ्रमता के ढेर में खो गये हैं। आज हम भ्रष्ट राजनीज्ञियों, गैर जिम्मेदार व्यापारियों, बेईमान भाषणकर्ताओं, मतलबी लोगों शराबियों और अनैतिक लोगों को पूर्णता के प्रतिरूप मानते हुये पूजे जाते हुये देखने के साक्षी हैं।

इस सन्दर्भ में कुछ सुझाव इस प्रकार हैं-

1. रामचरित मानस में लोकमंगल की भावना निहित है तथा इसमें आदर्श जीवन की झांकी निहित है। अतः इसके उदाहरणों की शिक्षा में महती आवश्यकता है।

2. नैतिक शिक्षा विषय को अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए।

3. भक्ति कालीन साहित्य विशेषकर रामचरितमानस लोक कल्याण की विचारधारा का बखूबी निर्वहन करती है। अतः छात्र छात्राओं को इस प्रकार के ज्ञान की आवश्यकता है।

4. साहित्य द्वारा प्रतिपादित मूल्य व्यक्ति के चरित्र निर्माण में सहायक होते हैं। जिससे समाज में स्वस्थ प्रवृत्तियों का निर्माण होता है। निसन्देह भारतीय साहित्य मानवीय मूल्यों की दृष्टि से समृद्ध है और आज शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यकता है।

निष्कर्ष-

मानवीय मूल्य समस्त मानवों की आचार संहिता के आधार हैं। यह कहना अनुचित न होगा कि संस्कृति और मानवीय मूल्य परस्पर एक ही वृक्ष पर लगने वाले फल हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के आधारभूत नायक राम तो सम्पूर्ण मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत थे। बाल्यावस्था से ही उन्होने संसार के

ISSN: 0974-0066

कल्याण के लिये अपने सभी सुखों का त्याग किया। रामचरित मानस का प्रतीक पात्र मानवीय मूल्यों व गुणों को प्रकट कर रहा है। बालकाण्ड में राजा दशरथ के राजदरबार का वर्णन एवं उनके मन्त्रियों में जो योग्यता, सत्यभागिता तथा परोपकार का होना मानवीय गुणों का भण्डार है साथ ही विभीषण का रावण को उपदेश भी मानवीय मूल्यों को प्रकट करता है। अतः हम कह सकते हैं कि मानवीय मूल्यों के सन्दर्भ में रामचरित मानस का अध्ययन अनिवार्य है क्योंकि इसकी आवश्यकता व प्रासांगिता हर देश, काल व सीमा में उपयोगी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. दास तुलसी रा०च०मा०, उ०का० गीता प्रेस गोरखपुर
२. डॉ० भारद्वाज रामदत्त तुलसीदर्शन (१९५३)
३. डॉ० कुमार श्रीषि, रामचरित मानस का तत्व दर्शन (१९६६)
४. डॉ० सिंह भानुउदय, तुलसी दर्शन समीक्षा (१९६०)
५. डॉ० सिंह भानुउदय, तुलसी दर्शन समीक्षा (१९६०)
६. डॉ० आर्य स्वरूप राम, तुलसी मानस सन्दर्भ (१९७४)
७. छवअमउइमत १९८९ जनमानस मोती दर्शन कोष, प्रगति प्रकाशन मास्को (१९८०) पृष्ठ संख्या १२६, ै ठछ.५-०१०००९०७-२
८. भगवत गीता, गीता प्रेस गोरखपुर
९. श्री भगवद् गीता यथारूप १३ (२० भक्ति वेदान्त बुक ट्रस्ट)
१०. श्री विश्वनाथ संस्कृति, विकीपीडिया से